भजन

तर्ज–अपने जीवन की उलझन को

अपने प्राणों के प्रीतम को कैसे मैं रिझाऊं
ना सेवा ना बंदगी मेरी कैसे उनको भाऊं

1– जान के निसवत धाम की तुमने,
आकर गले लगाया
तुम दूल्हा मैं दुलहन तेरी,
इश्क मैं तेरा पाऊं

2– मेरे दिल की तुम ही जानो,
और न कोई जाने
तुम बिन मेरा और न कोई,
किसको हाल सुनाऊं